ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 51-52**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संचार माध्यमों के प्रति जागरूकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर

राम लखन पाण्डेय
असि० प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र विभाग, के०बी०पी०जी० कालेज, मीरजापुर (उ०प्र०) भारत

Received-07.07.2022, Revised-11.07.2022, Accepted-10.10.2022 E-mail: ramlakhan4094@gmail.com

सारांशः *– शिक्षा के प्रत्येक पक्ष को आज आधुनिक संचार माध्यमों ने प्रभावित किया है, जिनमें शैक्षिक उपलब्धि महत्वपूर्ण है। शिक्षा में ज्ञानेन्द्रियों पर आधारित ज्ञान को अधिक स्थायी एवं श्रेयस्कर माना जाता है, परन्तु इस ज्ञानेन्द्रिय आधारित ज्ञान को अधिक स्थायी बनाने के लिए आधुनिक संचार माध्यम का बढ़ता हुआ उपयोग अपना महत्व रखता है। इससे अध्यापक व छात्र दोनों में विभिन्न प्रकार की नवाचार विधियों एवं नवीन वस्तुओं के विषय में आकर्षण उत्पन्न होता है, क्योंकि उसमें नवीन वस्तुओं के बारे में जानने की स्वाभाविक जिज्ञासा होती है। शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक संचार माध्यम छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि, संवेगात्मक संतुष्टि तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इसके द्वारा छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान रखते हुए उन्हें सरल, सहज व बोधगम्य ढंग से शिक्षा प्रदान की जा सकती है। आधुनिक संचार माध्यम के द्वारा छात्रों की रूचि, योग्यता, क्षमता एवं उपलब्धि में अभिवृद्धि कर उनमें जागरूकता एवं व्यवहारिक प्रयोग का ज्ञान कराया जा रहा है। सरकार द्वारा शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिसमें समाज के निर्बल वर्ग का भी बहुमुखी विकास हो सकें। इसके लिए सरकार द्वारा प्रदान किये गये सुविधाओं के बावजूद विद्यार्थियों में शिक्षा की पर्याप्त कमी दिखायी पड़ती है, जैसे–उनका विद्यालय में अनुपस्थित होना व उचित सुविधाएं न प्राप्त कर सकना, शिक्षा के प्रति रूचि न लेना आदि बहुत से ऐसे कारण है, जो शैक्षिक स्तर में पर्याप्त अनुपलब्धि के कारण, के रूप में दिखायी पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रति जागरूकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की गई।*

कुंजीभूत शब्द– श्रेयस्कर, संवेगात्मक, बोधगम्य, बहुमुखी विकास, जिज्ञासा, नवाचार, अधिग्रहण, योग्यता, क्षमता, संचार।

21वीं सदी भारतीय शिक्षण व्यवस्था की गुणवत्ता में सुधार के लिए सर्वोत्तम है। यह बदलाव शिक्षा में संचार माध्यमों के प्रयोग के फलस्वरूप सम्भव है। इसका कारण प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षाओं, दूरस्थ शिक्षा एवं व्यावसायिक कक्षाओं की शिक्षा में आधुनिक संचार माध्यमों का प्रयोग अनिवार्य बनाया जा रहा है और इसका प्रभाव भी सार्थक आ रहा है। शिक्षा में इनका तात्पर्य है शिक्षा के माध्यम का यन्त्रीकरण करना। शिक्षा के क्षेत्र में भी इस वैश्वीकरण के काल में कम्प्यूटर, स्लाइड, प्रोजक्टर, फिल्म, चित्र, ग्राफचार्ट, इन्टरनेट, इन्टरेक्टिव वीडियो, टेलीकॉफ्रेंकसंग, टैलिटैक्स्ट, वीडियो टैक्स्ट और मोबाइल लर्निंग आदि शैक्षिक संचार माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है। आधुनिक संचार माध्यमों से भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में सूचनाओं को विभिन्न स्वरूप में संसाधन, सम्प्रेषण, अधिग्रहण एवं पुनः प्राप्ति आदि कार्यो को द्रुतगति से त्रुटिरहित तथा कुशलता पूर्ण कार्यान्वित किया जाता है। (प्रधान, विजेन्द्र, 2012: 53–54)।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था मूलतः परम्परागत रही है। सभ्यता के विकास के साथ ही हमारी शिक्षण व्यवस्था की विकास गाथा भी इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। शिक्षा एक महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है। अतीत काल से मनुष्य ने जागरूक रहकर अपनी वाक्शीलता का व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, अपने व्यावहारिक अभुवन भण्डार का संचार करने के लिए उपयोग किया है। इनमें प्राकृतिक घटनाओं, नियमों, विधि–निषेध की सांकेतिक भाषा का उपयोग है, तॉकि व्यक्ति का सामाजीकरण हो सके और व्यक्ति का स्मृति के माध्यम से पूरी जाति जीवित रह सके। शिक्षा एवं सामाजिक आवश्यकता है, जो सभी दोनों वर्गो को दिशा और स्वरूप देने में सहायक है। भारत वर्ष में शिक्षण व्यवस्था के विकास–क्रम मे माध्यमों का व्यापक महत्त्व रहा है। आधुनिक संचार माध्यमों की शिक्षा के क्षेत्र में महती आवश्यकता है। विद्यार्थियों की योग्यतानुसार पाठ्य सामग्री को बोधगम्य एवं उन्हें जागरूक बनाने के ये अच्छे उपकरण हैं। इनका व्यापक प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल, सुबोध एवं सुगम बनाने में किया जाता है। आधुनिक संचार माध्यम शिक्षा के सभी रूपों में प्रमुख भूमिका का निर्वाह करते हैं। औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक सभी प्रकार की शिक्षा प्रदान करने में आधुनिक संचार तकनीकी का केन्द्रीय महत्व है। आधुनिक संचार माध्यमों का महत्व शिक्षा प्रदान करने में अत्यधिक है, जो प्रजातांत्रिक देश की एक महती आवश्यकता है। अध्ययन की समस्या का शीर्षक "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संचार माध्यमों के प्रति जागरूकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव" मीरजापुर जनपद के परिप्रेक्ष्य में है।

विधि : सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यायदर्श : मीरजापुर जनपद के विभिन्न माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में से 200 विद्यार्थियों का चयन सोद्देश्यपूर्ण

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

न्यादर्शविधि से किया गया, जो कक्षा 10 में अध्ययनरत थे।[1]

परिकल्पना : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संचार माध्यमों के प्रति जागरूकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

उपकरण–(1) संचार माध्यमों के प्रति जागरूकता ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित "संचार माध्यम जागरूकता प्रश्नावली" का प्रयोग किया गया है।

(2) शैक्षिक उपलब्धि हेतु माध्यमिक विद्यालय के गृह परीक्षा के प्राप्तांकों का प्रतिशत लिया गया है।

तालिका

संख्या	संचार माध्यमों का मध्यमान	शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान	सह–सम्बन्धगुणांक
200	46	51	0.8134

0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक है।

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित सह–सम्बन्ध गुणांक से स्पष्ट होता है कि बालकों का संचार माध्यम के प्रति जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य सार्थक सम्बन्ध है जो सांख्यकीय दृष्टिकोण से सार्थकता के 0.01 तथा 0.05 स्तर पर सार्थक धनात्मक सम्बन्ध दर्शाता है।

विवेचना : सार्थक धनात्मक सम्बन्ध का तात्यपर्य होता है कि एक चर का प्रभाव बढ़ने पर दूसरे चर का प्रभाव बढ़ता है तथा पहले चर का प्रभाव घटने पर दूसरे चर का प्रभाव घटता है। विद्यार्थियों में संचार साधनों के प्रति जागरूकता अच्छी होने पर शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होती है। प्राप्त परिणाम से ज्ञात होता है कि जिन विद्यार्थियो को संचार के साधनों की जानकारी एवं उपलब्धता अच्छी है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी है, जिनके पास जागरूकता एवं उपलब्धता सामान्य है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी सामान्य है तथा जिन विद्यार्थियों के पास संचार साधनो की जागरूकता का अभाव है उनकी शैक्षिक उपलब्धि की निम्न कोटि की है। षिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक संचार साधन विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि से गहरा सम्बन्ध है। जिन विद्यार्थियों के पास संचार साधनों की जागरूकता है उनकी शैक्षिक उपलब्धि अच्छी है। आधुनिक संचार साधनो के अभाव के कारण विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में पर्याप्त कमी दिखाई पड़ती है। जैसे उसका विद्यालय में अधिकतर अनुपस्थित होना, शिक्षा के प्रति कम रूचि लेना। सीखने में कमी आदि। जिससे वह शिक्षा को बोझ समझने लगता है। परिणाम स्वरूप शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी नहीं होती। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों का संचार माध्यमों के प्रति जागरूकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालती है तथा इसके मध्य सार्थक सह सम्बन्ध है।

सुझाव–

1. शिक्षा के आधुनिक संचार माध्यमों के प्रयोग को बढ़ावा।
2. विद्यार्थियों को आधुनिक संचार साधनो के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया जाय।
3. आधुनिक संचार माध्यमों से विद्यार्थियो को अवगत कराया जाय।
4. कक्षा अभिनय में एक विशेष स्तर तक संवाद बनाये रखने व गतिशीलता कायम करने के लिए दृश्य–श्रव्य सामग्री को प्रयोग किया जाय।
5. शैक्षिक तकनीकी जैसे कम्प्यूटर सह अनुदेशन, अभिक्रमिक अनुदेशन का भरपूर प्रयोग किया जाय।
6. आधुनिक संचार माध्यमों का विद्यार्थियों के लिए आवश्यकता एवं महत्व को देखते हुए उन्हें उचित उपकरणों को निःशुल्क उपलब्ध कराया जाय।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल, एच0के0 – अनुसंधान विधियाँ, हरि प्रसाद भार्गव पब्लि0, आगरा (1984).
2. जैन, वी0एम0 – रिसर्च मेथोलॉजी, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर (1989).
3. अग्रवाल, जे0सी0 – शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध के आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा (2012).
4. गुप्ता, बृजमोहन – जन संचार के विविध आयाम, राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा0लि0, नई दिल्ली (1992).
5. गुप्ता, एस0पी0 – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (1995).
6. पाण्डेय, के0वी0 – शिक्षण अभिगम की तकनीकी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (2011).
7. शील, अवनीन्द्र – शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं अधिगमकर्त्ता का विकास (प्रथम संस्करण) (2005).

*****